अध्याय 11: तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

विषय-सूची 8 प्रश्नावली · 31 प्रश्न

प्रश्नावली 11.1	मौखिक — एक-दो पंक्तियों में उत्तर	8 प्रश्न
प्रश्नावली 11.2	लिखित (क) — 25-30 शब्दों में उत्तर	7 प्रश्न
प्रश्नावली 11.3	लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में उत्तर	7 प्रश्न
प्रश्नावली 11.4	लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए	5 प्रश्न
प्रश्नावली 11.5	भाषा अध्ययन — मुहावरों से वाक्य	1 प्रश्न
प्रश्नावली 11.6	भाषा अध्ययन — हिंदी पर्याय	1 प्रश्न
प्रश्नावली 11.7	भाषा अध्ययन — संधि-विच्छेद	1 प्रश्न
प्रश्नावली 11.8	भाषा अध्ययन — समास विग्रह	1 प्रश्न

प्रश्नावली 11.1 — मौखिक — एक-दो पंक्तियों में उत्तर

प्रश्न 1

'तीसरी कसम' फ़िल्म को कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है?

हल

'तीसरी कसम' को 'राष्ट्रपति स्वर्णपदक' मिला।
बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा इसे सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार मिला।
इसके अलावा कई अन्य पुरस्कारों से भी यह सम्मानित हुई और मास्को फ़िल्म फेस्टिवल में भी यह फ़िल्म पुरस्कृत हुई।

उत्तर: 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्णपदक, बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन का सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म पुरस्कार, मास्को फ़िल्म फेस्टिवल पुरस्कार तथा कई अन्य पुरस्कार मिले।

प्रश्न 2

शैलेंद्र ने कितनी फ़िल्में बनाईं?

हल

शैलेंद्र ने केवल एक ही फ़िल्म बनाई — 'तीसरी कसम'।
पाठ के अनुसार 'तीसरी कसम' शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फ़िल्म है।

उत्तर: शैलेंद्र ने केवल एक फ़िल्म बनाई — 'तीसरी कसम', जो उनकी पहली और अंतिम फ़िल्म थी।

प्रश्न 3

राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फ़िल्मों के नाम बताइए।

हल

पाठ में राजकपूर द्वारा निर्माण की घोषणा की गई फ़िल्मों के नाम मिलते हैं — 'मेरा नाम जोकर', 'अजन्ता', 'मैं और मेरा दोस्त' और 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्'।
पाठ में 'जागते रहो' का उल्लेख भी राजकपूर अभिनीत फ़िल्म के रूप में है।
इसके अलावा 'संगम' फ़िल्म का भी उल्लेख है जिसकी सफलता ने राजकपूर में आत्मविश्वास भरा।

उत्तर: पाठ के अनुसार राजकपूर द्वारा निर्देशित/निर्मित फ़िल्मों में 'मेरा नाम जोकर', 'अजन्ता', 'मैं और मेरा दोस्त', 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्', 'संगम' और 'जागते रहो' शामिल हैं।

प्रश्न 4

'तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक व नायिकाओं के नाम बताइए और फ़िल्म में इन्होंने किन पात्रों का अभिनय किया है?

हल

'तीसरी कसम' फ़िल्म के नायक राजकपूर थे।
राजकपूर ने इस फ़िल्म में 'हीरामन' (एक सरल देहाती गाड़ीवान) का अभिनय किया।
फ़िल्म की नायिका वहीदा रहमान थीं।
वहीदा रहमान ने 'हीराबाई' (एक नौटंकी की बाई) का पात्र निभाया।

उत्तर: नायक राजकपूर ने 'हीरामन' (देहाती गाड़ीवान) का और नायिका वहीदा रहमान ने 'हीराबाई' (नौटंकी की बाई) का अभिनय किया।

प्रश्न 5

फ़िल्म 'तीसरी कसम' का निर्माण किसने किया था?

हल

फ़िल्म 'तीसरी कसम' का निर्माण कवि और गीतकार शैलेंद्र ने किया था।
यह उनके जीवन की पहली और अंतिम फ़िल्म थी।

उत्तर: फ़िल्म 'तीसरी कसम' का निर्माण कवि-गीतकार शैलेंद्र ने किया था।

प्रश्न 6

राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी?

हल

जब 1965 में राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' का निर्माण आरंभ किया तब उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि इस फ़िल्म का एक ही भाग बनाने में छह वर्षों का समय लग जाएगा।

उत्तर: राजकपूर ने कल्पना नहीं की थी कि 'मेरा नाम जोकर' के केवल एक भाग के निर्माण में ही छह वर्षों का समय लग जाएगा।

प्रश्न 7

राजकपूर की किस बात पर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया?

हल

जब शैलेंद्र 'तीसरी कसम' की कहानी सुनाने राजकपूर के पास पहुँचे और राजकपूर ने उत्साहपूर्वक काम करना स्वीकार कर लिया,
तभी राजकपूर ने गंभीरतापूर्वक कहा — 'मेरा पारिश्रमिक एडवांस देना होगा।'
जीवन-भर की दोस्ती के बाद इस तरह पारिश्रमिक माँगने की बात सुनकर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया।

उत्तर: राजकपूर द्वारा 'मेरा पारिश्रमिक एडवांस देना होगा' — यह कहने पर शैलेंद्र का चेहरा मुरझा गया, क्योंकि जीवन-भर की दोस्ती के बाद ऐसी माँग अप्रत्याशित थी।

प्रश्न 8

फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे?

हल

फ़िल्म समीक्षक और कला-मर्मज्ञ राजकपूर को 'आँखों से बात करने वाला कलाकार' मानते थे।
अर्थात् वह अपने अभिनय में आँखों के माध्यम से भावों को व्यक्त करने में माहिर थे।

उत्तर: फ़िल्म समीक्षक और कला-मर्मज्ञ राजकपूर को 'आँखों से बात करने वाला कलाकार' मानते थे।

प्रश्नावली 11.2 — लिखित (क) — 25-30 शब्दों में उत्तर

प्रश्न 1

'तीसरी कसम' फ़िल्म को 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' क्यों कहा गया है?

हल

'तीसरी कसम' को 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' इसलिए कहा गया है क्योंकि इसमें एक सच्चे कवि-हृदय शैलेंद्र की संवेदनशीलता पूरी शिद्दत के साथ मौजूद है।
इस फ़िल्म में हिंदी साहित्य की अत्यंत मार्मिक कृति को पूरी सार्थकता से पर्दे पर उतारा गया।
इसमें करुणा, सौंदर्य और लोक-तत्त्व इतनी कुशलता से पिरोए गए हैं कि वह महज फ़िल्म नहीं, एक काव्य-कृति जैसी बन गई।

उत्तर: 'तीसरी कसम' में कवि शैलेंद्र की संवेदना और काव्यात्मकता पूरी तरह उतरी है; इसमें साहित्यिक मार्मिकता, करुणा और लोक-तत्त्व ऐसे गुंथे हैं कि यह फ़िल्म नहीं, सैल्यूलाइड पर लिखी कविता लगती है।

प्रश्न 2

'तीसरी कसम' फ़िल्म को खरीदार क्यों नहीं मिल रहे थे?

हल

'तीसरी कसम' फ़िल्म की संवेदना किसी 'दो से चार बनाने का गणित जानने वाले' की समझ से परे थी।
फ़िल्म में रची-बसी करुणा तराजू पर तौली जा सकने वाली चीज नहीं थी।
राजकपूर, वहीदा रहमान जैसे बड़े सितारे और शंकर-जयकिशन का संगीत होने के बावजूद वितरकों को इसमें व्यावसायिक संभावना नजर नहीं आई।

उत्तर: फ़िल्म की संवेदना और करुणा व्यावसायिक गणित से परे थी, इसलिए वितरकों को इसमें मुनाफे की संभावना नजर नहीं आई और खरीदार नहीं मिले।

प्रश्न 3

शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है?

हल

शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य है कि दर्शकों की रुचि की आड़ में उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए।
कलाकार का यह दायित्व है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।
अर्थात् कलाकार को लोगों की रुचि ऊपर उठानी चाहिए, उसे गिराना नहीं चाहिए।

उत्तर: शैलेंद्र के अनुसार कलाकार को दर्शकों की रुचि की आड़ में उथलेपन नहीं थोपना चाहिए; बल्कि उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करना कलाकार का कर्तव्य है।

प्रश्न 4

फ़िल्मों में त्रसद स्थितियों का चित्रंकन ग्लोरीफ़ाई क्यों कर दिया जाता है?

हल

फ़िल्मों में त्रसद (दुखद) स्थितियों को ग्लोरीफ़ाई इसलिए किया जाता है ताकि दुख का वीभत्स रूप प्रस्तुत करके दर्शकों का भावनात्मक शोषण किया जा सके।

निर्माता यह सोचते हैं कि अतिरंजित दुख दर्शकों को अधिक प्रभावित करेगा और फ़िल्म सफल होगी।

हमारी फ़िल्मों में लोक-तत्त्व का अभाव होता है और वे जिंदगी से दूर होती हैं, इसीलिए कृत्रिम अतिशयोक्ति का सहारा लिया जाता है।

उत्तर: फ़िल्म निर्माता दर्शकों का भावनात्मक शोषण करने के लिए दुख को वीभत्स रूप में ग्लोरीफ़ाई करते हैं, क्योंकि उनकी फ़िल्में जीवन से दूर और लोक-तत्त्व से रहित होती हैं।

प्रश्न 5

'शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' — इस कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

हल

इस कथन का अर्थ है कि शैलेंद्र और राजकपूर दोनों की संवेदनाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी थीं।

राजकपूर जो भाव अभिनय के माध्यम से व्यक्त करते थे, शैलेंद्र उन्हीं भावों को अपने गीतों और कहानी में शब्दों का रूप देते थे।

'तीसरी कसम' में राजकपूर ने बिना पारिश्रमिक के काम किया — यह उनकी उस भावना को दर्शाता है जो शैलेंद्र के माध्यम से अभिव्यक्त हो रही थी।

शैलेंद्र के गीत और कहानी राजकपूर की आंतरिक भावनाओं की सटीक अभिव्यक्ति थे।

उत्तर: शैलेंद्र और राजकपूर की संवेदनाएँ गहराई से जुड़ी थीं — राजकपूर जो भाव अभिनय में जीते थे, शैलेंद्र उन्हीं को अपने गीतों-संवादों में शब्द देते थे; दोनों एक-दूसरे के पूरक थे।

प्रश्न 6

लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं?

हल

शोमैन का अर्थ है — वह व्यक्ति जो मनोरंजन कला में असाधारण प्रतिभा रखता हो और जनसामान्य को अपने प्रदर्शन से मंत्रमुग्ध कर दे।

राजकपूर न केवल एक कुशल अभिनेता थे बल्कि एक सफल निर्देशक और निर्माता भी थे।

उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि वे एशिया भर में पहचाने जाते थे।

उन्होंने अपने करियर में ऐसी फ़िल्में बनाईं जो दर्शकों को पूरी तरह मनोरंजित करती थीं — यही शोमैन की पहचान है।

उत्तर: शोमैन वह होता है जो मनोरंजन कला में असाधारण प्रतिभा से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दे। राजकपूर कुशल अभिनेता, निर्देशक और निर्माता थे जिनका व्यक्तित्व एशिया भर में प्रसिद्ध था।

प्रश्न 7

फ़िल्म 'श्री 420' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की?

हल

संगीतकार जयकिशन का खयाल था कि दर्शक 'चार दिशाएँ' तो समझ सकते हैं — 'दस दिशाएँ' नहीं।
जयकिशन चाहते थे कि इस पंक्ति को बदला जाए ताकि आम दर्शक इसे आसानी से समझ सकें।
लेकिन शैलेंद्र ने यह परिवर्तन करने से इनकार कर दिया क्योंकि वे दर्शकों की रुचि के नाम पर उथलेपन को स्वीकार करने के पक्षधर नहीं थे।

उत्तर: जयकिशन को लगता था कि दर्शक 'चार दिशाएँ' समझते हैं, 'दस दिशाएँ' नहीं। वे चाहते थे शब्द बदला जाए, पर शैलेंद्र ने दर्शक की रुचि के नाम पर उथलेपन स्वीकार करने से मना कर दिया।

प्रश्नावली 11.3 — लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में उत्तर

प्रश्न 1

राजकपूर द्वारा फ़िल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फ़िल्म क्यों बनाई?

हल

शैलेंद्र एक आदर्शवादी भावुक कवि थे।
उन्हें अपार संपत्ति और यश की उतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।
राजकपूर ने उन्हें फ़िल्म की व्यावसायिक असफलता के खतरों से आगाह किया, परंतु शैलेंद्र ने परवाह नहीं की।
वे फणीश्वरनाथ रेणु की अमर कृति 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम' को पर्दे पर उतारना चाहते थे।
उनके लिए इस फ़िल्म का निर्माण एक कलाकार का संकल्प था, न कि व्यावसायिक उद्यम।
उनका मानना था कि कला का उद्देश्य आत्म-संतोष है, मुनाफ़ा नहीं।

उत्तर: शैलेंद्र आदर्शवादी कवि थे जिन्हें धन-यश से अधिक आत्म-संतुष्टि प्रिय थी। फणीश्वरनाथ रेणु की मार्मिक कृति को पर्दे पर उतारना उनकी कलाकार-दृष्टि की अभिलाषा थी, इसलिए व्यावसायिक खतरे जानते हुए भी उन्होंने फ़िल्म बनाई।

प्रश्न 2

'तीसरी कसम' में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है? स्पष्ट कीजिए।

हल

'तीसरी कसम' बनते समय राजकपूर एशिया के सबसे बड़े शोमैन के रूप में स्थापित हो चुके थे।
उनका अपना व्यक्तित्व एक किंवदंती बन चुका था।
लेकिन 'तीसरी कसम' में वह महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया।
राजकपूर हीरामन का अभिनय नहीं करते, बल्कि खुद हीरामन बन गए।
वे खालिस देहाती, भुच्च गाड़ीवान बन गए जो सिर्फ़ दिल की जुबान समझता है।
हीराबाई की फेनू-गिलासी बोली पर रीझते, उसकी 'मनुआ-नटुआ' जैसी भोली सूरत पर न्योछावर होते और तनिक-सी उपेक्षा पर अस्तित्व से जूझते सच्चे हीरामन बन गए।
इस फ़िल्म में राजकपूर मासूमियत के चर्मोत्कर्ष को छूते हैं।

उत्तर: एशिया के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर ने 'तीसरी कसम' में अपने महिमामय व्यक्तित्व को पूरी तरह हीरामन में विलीन कर दिया — वे सच्चे देहाती गाड़ीवान बन गए: हीराबाई की बोली पर रीझते, उसकी सूरत पर न्योछावर होते और उपेक्षा में अस्तित्व से जूझते।

प्रश्न 3

लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है?

हल

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम' पर आधारित इस फ़िल्म की पटकथा स्वयं रेणु ने तैयार की थी।

कहानी का रेशा-रेशा, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फ़िल्म में पूरी तरह उतर आईं।

शैलेंद्र ने राजकपूर जैसे स्टार को 'हीरामन' बना दिया और 'हीराबाई' ने वहीदा रहमान की ऊँचाइयों को पीछे छोड़ दिया।

लोक-गीत, लोक-तत्त्व और पात्रों की सहजता — सब साहित्यिक कृति के अनुरूप थे।

इसीलिए यह 'तीसरी कसम' उन चंद फ़िल्मों में है जिन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया।

उत्तर: रेणु की कहानी की पटकथा रेणु ने स्वयं बनाई; कहानी का रेशा-रेशा, पात्रों की सहजता, लोक-तत्त्व — सब ज्यों-के-त्यों उतरे। शैलेंद्र ने राजकपूर को हीरामन और वहीदा को हीराबाई में पूरी तरह ढाल दिया, इसीलिए यह साहित्य के साथ शत-प्रतिशत न्याय करती है।

प्रश्न 4

शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएँ हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

हल

शैलेंद्र के गीत भाव-प्रवण थे — दुरूह (कठिन) नहीं।

उनके गीत सरल, सहज भाषा में गहरी बात कहते थे।

उन्होंने झूठे अभिजात्य को कभी नहीं अपनाया।

उनके गीतों में केवल करुणा नहीं, बल्कि जूझने का संकेत और मंजिल तक पहुँचने की प्रक्रिया भी थी।

उनके गीत दर्शकों की रुचि का परिष्कार करते थे, उथलेपन को बढ़ावा नहीं देते थे।

'मेरा जूता है जापानी...' जैसे गीत शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई लिए हुए थे।

व्यथा को वे पराजय नहीं, आगे बढ़ने का संदेश बनाते थे।

उत्तर: शैलेंद्र के गीत सरल-सहज भाषा में गहरी बात कहते थे, भाव-प्रवण थे पर दुरूह नहीं। उनमें करुणा के साथ जूझने का संकेत था; वे दर्शकों की रुचि परिष्कृत करते और व्यथा को आगे बढ़ने का संदेश देते थे।

प्रश्न 5

फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

हल

शैलेंद्र एक आदर्शवादी और संवेदनशील फ़िल्म निर्माता थे।

उन्होंने धन-यश की परवाह किए बिना एक कालजयी साहित्यिक कृति को पर्दे पर उतारा।

वे 20 वर्षों तक फ़िल्म उद्योग में रहे पर वहाँ के तौर-तरीकों में उलझकर अपनी 'आदमियत' नहीं खोई।

उन्होंने ऐसी फ़िल्म बनाई जो 'सैल्यूलाइड पर लिखी कविता' बन गई।

उनकी फ़िल्म में लोक-तत्त्व, सहजता और जीवन की सच्चाई थी।

उन्होंने दर्शकों की रुचि के नाम पर कलात्मकता से समझौता नहीं किया।

उत्तर: शैलेंद्र एक आदर्शवादी, संवेदनशील फ़िल्म निर्माता थे। 20 वर्षों के फ़िल्मी अनुभव के बावजूद उन्होंने अपनी 'आदमियत' नहीं खोई। उन्होंने लोक-तत्त्व और साहित्यिक मार्मिकता को प्राथमिकता दी और व्यावसायिक दबाव में कला से समझौता नहीं किया।

प्रश्न 6

शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फ़िल्म में झलकती है — कैसे? स्पष्ट कीजिए।

हल

शैलेंद्र का निजी जीवन सरल, आदर्शवादी और धन-यश से दूर था।
वे सिनेमा की चकाचौंध में रहते हुए भी यश और धन-लिप्सा से कोसों दूर थे।
उनके गीतों में भी यही विशेषता थी — सरल शब्दों में गहरी बात।
'तीसरी कसम' में भी वही सरलता, वही करुणा और वही जीवन-सत्य उतरा जो उनके व्यक्तित्व में था।
उन्होंने हीरामन जैसे सीधे-सादे इंसान की कहानी चुनी जो दिल की जुबान समझता है।
शांत नदी का प्रवाह और समुद्र की गहराई — यही उनकी जिंदगी की विशेषता थी और यही उनकी फ़िल्म में भी उतरी।

उत्तर: शैलेंद्र का जीवन सरल, निरासक्त और करुणामय था — यही 'तीसरी कसम' में उतरा। हीरामन की सरलता, लोक-तत्त्व, दुख को सहज रूप में प्रस्तुत करना — ये सब शैलेंद्र के निजी जीवन की ही अभिव्यक्ति हैं।

प्रश्न 7

लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

हल

मैं इस कथन से पूर्णतः सहमत हूँ।
'तीसरी कसम' में जो संवेदनशीलता, करुणा और काव्यात्मकता है, वह केवल एक सच्चे कवि-हृदय की ही उपज हो सकती है।
शैलेंद्र ने इस फ़िल्म में दुख को वीभत्स नहीं, सहज और जीवन-सापेक्ष रूप में प्रस्तुत किया।
फ़िल्म में लोक-गीत, लोक-संस्कृति और पात्रों की आत्मीयता ऐसी है जो कोई व्यावसायिक निर्माता नहीं दे सकता था।
शैलेंद्र ने राजकपूर जैसे स्टार को 'हीरामन' बनाने और वहीदा रहमान को 'हीराबाई' में ढालने की जो कल्पना की, वह एक कवि की दृष्टि से ही संभव थी।

उत्तर: यह कथन सर्वथा सही है। 'तीसरी कसम' की संवेदना, करुणा और काव्यात्मकता, दुख की सहज प्रस्तुति और लोक-तत्त्व — ये सब एक कवि-हृदय की ही देन हैं। कोई व्यावसायिक निर्माता इस गहराई को नहीं छू सकता था।

प्रश्नावली 11.4 — लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

आशय स्पष्ट कीजिए — 'वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।'

हल

इस कथन में शैलेंद्र के व्यक्तित्व को रेखांकित किया गया है।
शैलेंद्र एक ऐसे कवि थे जो भौतिक संपत्ति और प्रसिद्धि को जीवन का लक्ष्य नहीं मानते थे।
उनके लिए धन-दौलत से बड़ी थी आत्म-संतुष्टि — यानी अपने मन की आवाज के अनुसार काम करने का सुख।
'तीसरी कसम' का निर्माण उन्होंने इसी आत्म-संतुष्टि के लिए किया, भले ही फ़िल्म व्यावसायिक रूप से सफल न हो।
यह कथन उनके आदर्शवादी, निरासक्त कवि-स्वभाव को उजागर करता है।

उत्तर: शैलेंद्र धन-यश से नहीं, आत्म-संतुष्टि से प्रेरित होते थे। उन्होंने 'तीसरी कसम' इसीलिए बनाई क्योंकि यह उनके मन की अभिव्यक्ति थी — भौतिक लाभ नहीं, आंतरिक तृप्ति उनका उद्देश्य था।

प्रश्न 2

आशय स्पष्ट कीजिए — 'उनका यह दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।'

हल

इस कथन में शैलेंद्र की कला-दृष्टि और उनके सिद्धांत स्पष्ट होते हैं।
वे मानते थे कि 'दर्शक यही चाहते हैं' कहकर घटिया, सतही (उथला) काम करना उचित नहीं है।
कलाकार का दायित्व है कि वह दर्शकों की रुचि को ऊँचा उठाए, न कि उनकी कमजोरियों का फ़ायदा उठाए।
जयकिशन द्वारा 'दस दिशाएँ' की जगह 'चार दिशाएँ' लिखने का सुझाव देने पर भी शैलेंद्र ने इनकार कर दिया — यही उनकी दृढ़ता का उदाहरण है।
कलाकार को समाज को एक बेहतर अभिरुचि की ओर ले जाना चाहिए।

उत्तर: शैलेंद्र का मानना था कि दर्शकों की पसंद का बहाना बनाकर घटिया काम नहीं करना चाहिए। कलाकार का कर्तव्य है कि वह लोगों की रुचियाँ ऊँची करे, उन्हें उथलेपन में नहीं डुबोए।

प्रश्न 3

आशय स्पष्ट कीजिए — 'व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।'

हल

इस कथन में शैलेंद्र के गीतों और उनकी जीवन-दृष्टि का सार है।
शैलेंद्र के गीतों में केवल करुणा या दुख नहीं था, बल्कि उनमें जूझने और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी थी।
वे मानते थे कि जीवन में व्यथा (पीड़ा) आती है, लेकिन वह इंसान को टूटने नहीं देती — बल्कि उसे और मजबूत

बनाती है।

यह एक सकारात्मक जीवन-दर्शन है जो उनके गीतों में सदा उपस्थित था।

उत्तर: शैलेंद्र की जीवन-दृष्टि सकारात्मक थी — दुख टूटने के लिए नहीं, आगे बढ़ने की प्रेरणा देने के लिए होता है। उनके गीतों में यही संदेश था कि व्यथा इंसान को पराजित नहीं करती, उसे संघर्ष की शक्ति देती है।

प्रश्न 4

आशय स्पष्ट कीजिए — 'दरअसल इस फ़िल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।'

हल

इस कथन में 'दो से चार बनाना' मुहावरा है जिसका अर्थ है — व्यापारिक बुद्धि से काम करना, मुनाफ़ा कमाना।

आशय यह है कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म की संवेदना इतनी गहरी और कलात्मक थी कि सिर्फ़ लाभ-हानि का हिसाब लगाने वाले व्यापारी-वितरक उसका मूल्य नहीं समझ सके।

इसीलिए फ़िल्म को वितरक नहीं मिले — क्योंकि उन्हें बड़े सितारे और लोकप्रिय संगीत के बावजूद इसमें व्यावसायिक संभावना नजर नहीं आई।

यह कथन कला और व्यापार के बीच के मूलभूत अंतर को उजागर करता है।

उत्तर: 'दो से चार बनाना' यानी व्यावसायिक मुनाफ़े की सोच रखने वाले 'तीसरी कसम' की गहरी कलात्मक संवेदना नहीं समझ सकते थे। इसीलिए फ़िल्म को वितरक नहीं मिले — कला और व्यापार की दृष्टि में यही मूल अंतर है।

प्रश्न 5

आशय स्पष्ट कीजिए — 'उनके गीत भाव-प्रवण थे — दुरूह नहीं।'

हल

'भाव-प्रवण' का अर्थ है — भावनाओं से भरे हुए, हृदय को स्पर्श करने वाले।

'दुरूह' का अर्थ है — कठिन, जटिल, जो आसानी से न समझ में आए।

इस कथन का आशय यह है कि शैलेंद्र के गीत सरल, सहज भाषा में लिखे होते थे और सीधे हृदय तक पहुँचते थे।

वे न तो बनावटी थे, न क्लिष्ट — पर भाव-गहरे थे।

जैसे 'मेरा जूता है जापानी...' — यह अत्यंत सरल है पर राष्ट्रप्रेम की गहरी भावना से ओतप्रोत है।

उत्तर: शैलेंद्र के गीत सरल और सहज भाषा में होते थे (दुरूह नहीं), पर भावनाओं से परिपूर्ण (भाव-प्रवण) थे। वे आम दर्शक के दिल तक सीधे पहुँचते थे — जटिलता के बिना भी गहरे अर्थ देते थे।

प्रश्नावली 11.5 — भाषा अध्ययन — मुहावरों से वाक्य

प्रश्न 1

पाठ में आए निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाइए — चेहरा मुरझाना, चक्कर खा जाना, दो से चार बनाना, आँखों से बोलना

हल

चेहरा मुरझाना (निराश हो जाना) — परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने की खबर सुनकर राहुल का चेहरा मुरझा गया।
चक्कर खा जाना (अचंभित हो जाना / भ्रमित होना) — इतनी बड़ी रकम का हिसाब सुनकर अनुभवी व्यापारी भी चक्कर खा गया।
दो से चार बनाना (लाभ-हानि का गणित करना / मुनाफ़ा कमाना) — वह इंसान नहीं, बस दो से चार बनाना जानता है।
आँखों से बोलना (नेत्रों के भाव से अपनी बात कहना) — गूँगी बच्ची आँखों से ऐसा बोलती है कि सुनने वाले का मन भर आता है।

उत्तर: 1. चेहरा मुरझाना — परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने की खबर सुनकर राहुल का चेहरा मुरझा गया। 2. चक्कर खा जाना — इतनी बड़ी रकम का हिसाब सुनकर अनुभवी व्यापारी भी चक्कर खा गया। 3. दो से चार बनाना — वह इंसान नहीं, बस दो से चार बनाना जानता है। 4. आँखों से बोलना — गूँगी बच्ची आँखों से ऐसा बोलती है कि सुनने वाले का मन भर आता है।

प्रश्नावली 11.6 — भाषा अध्ययन — हिंदी पर्याय

प्रश्न 1

निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय दीजिए — (क) शिद्दत (ख) याराना (ग) बमुश्किल (घ) नावाकिफ़ (च) यकीन (छ) हावी (ज) खालिस (झ) रेशा

हल

(क) शिद्दत — तीव्रता, प्रबलता, तीखापन
(ख) याराना — दोस्ताना, मित्रवत्
(ग) बमुश्किल — बड़ी कठिनाई से, मुश्किल से
(घ) नावाकिफ़ — अनजान, अपरिचित
(च) यकीन — विश्वास, भरोसा
(छ) हावी — प्रभावी, छाया हुआ, प्रभुत्वशाली
(ज) खालिस — शुद्ध, निरा, बिल्कुल
(झ) रेशा — धागा, तंतु, सूत्र

उत्तर: (क) शिद्दत — तीव्रता (ख) याराना — दोस्ताना (ग) बमुश्किल — बड़ी कठिनाई से (घ) नावाकिफ़ — अनजान (च) यकीन — विश्वास (छ) हावी — प्रभावी (ज) खालिस — शुद्ध (झ) रेशा — धागा/तंतु

प्रश्नावली 11.7 — भाषा अध्ययन — संधि-विच्छेद

प्रश्न 1

निम्नलिखित का संधि-विच्छेद कीजिए — (क) चित्रंकन (ख) सर्वोत्कृष्ट (ग) चर्मोत्कर्ष (घ) रूपांतरण (ङ) घनानंद

हल

(क) चित्रंकन = चित्र + अंकन (अ + अ = आ → चित्र + अंकन; स्वर संधि / दीर्घ संधि नहीं — यहाँ 'न' का 'ण' अनुस्वार-पूर्वक होने से व्यंजन संधि: चित्र + अंकन)
(ख) सर्वोत्कृष्ट = सर्व + उत्कृष्ट (अ + उ = ओ; गुण संधि)
(ग) चर्मोत्कर्ष = चर्म + उत्कर्ष (अ + उ = ओ; गुण संधि)
(घ) रूपांतरण = रूप + अंतरण (अ + अ = आ; दीर्घ संधि)
(ङ) घनानंद = घन + आनंद (अ + आ = आ; दीर्घ संधि)

उत्तर: (क) चित्र + अंकन (ख) सर्व + उत्कृष्ट (गुण संधि) (ग) चर्म + उत्कर्ष (गुण संधि) (घ) रूप + अंतरण (दीर्घ संधि) (ङ) घन + आनंद (दीर्घ संधि)

प्रश्नावली 11.8 — भाषा अध्ययन — समास विग्रह

प्रश्न 1

निम्नलिखित का समास विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए — (क) कला-मर्मज्ञ (ख) लोकप्रिय (ग) राष्ट्रपति

हल

(क) कला-मर्मज्ञ = कला का मर्म जानने वाला → तत्पुरुष समास
(ख) लोकप्रिय = लोकों में प्रिय → अधिकरण तत्पुरुष समास
(ग) राष्ट्रपति = राष्ट्र का पति (नायक / मुखिया) → तत्पुरुष समास (संबंध तत्पुरुष)

उत्तर: (क) कला-मर्मज्ञ — कला का मर्म जानने वाला (तत्पुरुष) (ख) लोकप्रिय — लोकों में प्रिय (तत्पुरुष) (ग) राष्ट्रपति — राष्ट्र का पति (तत्पुरुष)